व्याकरण

निम्नलिखित वाक्यों को ध्यान से पढ़िए :

(क) बच्चे छत में खेल रहे हैं।
(ख) मेरी पिताजी बीमार हैं।
(ग) सरिता स्कूल जाता है।
(घ) वह ने खाना खाया।

– उपर्युक्त सभी वाक्य अशुद्ध हैं। इनमें व्याकरण के नियमों का पालन नहीं किया गया।

उपर्युक्त वाक्यों का शुद्ध रूप इस प्रकार है—

(क) बच्चे छत पर खेल रहे हैं।
(ख) मेरे पिताजी बीमार हैं।
(ग) सरिता स्कूल जाती है।
(घ) उसने खाना खाया।

हर भाषा के अपने-अपने नियम होते हैं। इन नियमों का ज्ञान हमें भाषा की व्याकरण से होता है। व्याकरण के नियमों से ही हम भाषा का सही उच्चारण, लिखना तथा पढ़ना सीखते हैं। यह स्पष्ट है कि भाषा को शुद्ध रूप से बोलने-लिखने और पढ़ने के लिए व्याकरण का ज्ञान होना आवश्यक है।

व्याकरण की परिभाषा

'व्याकरण' वह शास्त्र है जिसके द्वारा हम भाषा के नियमों को जानकर शुद्ध बोलना, पढ़ना तथा लिखना सीखते हैं।

E-Basta, District Administration, Pathankot

व्याकरण के अंग

व्याकरण के निम्नलिखित तीन अंग माने जाते हैं :

(i) वर्ण विचार :- इसमें वर्णों के स्वरूप, उनके भेद, वर्ण-संयोग, वर्ण- विच्छेद आदि पर विचार किया जाता है।

(ii) शब्द विचार :- इसमें शब्द, उसके भेद, शब्द उत्पत्ति, रचना तथा रूपांतर आदि पर विचार किया जाता है।

(iii) वाक्य-विचार :- इसमें वाक्य रचना, वाक्य के भेद, विराम-चिह्न आदि पर विचार किया जाता है।

साहित्य

हर भाषा में ज्ञान की बातों को लिखकर आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित किया जाता है। इसी का नाम साहित्य है।

किसी भाषा के ज्ञान के संचित कोश को साहित्य कहा जाता है।

साहित्य मुख्य रूप से दो प्रकार का होता है:—

(i) गद्य साहित्य
(ii) पद्य साहित्य

(i) गद्य साहित्य – कहानी, नाटक, उपन्यास, निबंध, पत्र आदि गद्य साहित्य के अंतर्गत आते हैं।

(ii) पद्य साहित्य – गीत, कविताएँ जैसी रचनाएँ पद्य साहित्य के अंतर्गत आती हैं।

—o—

रमेश कुमार
हिन्दी मास्टर
स.ह.स धरियाल (पठानकोट)

E-Basta District Administration, Pathankot